1—मुक्तक

छपा में छिपाकर बदन क्यों रहें
गए सिन्धु में सिन्धुसुत क्यो पुनः।
सुधाघट सुधाकर के संग ही गया,
अधर तृप्ति होंगे जुगल क्या पुनः।।

2—मुक्तक

निमिष निमिष हैं नयन बरसते,
व्यर्थ गगन घनघोर।
यहाँ सदा पावस रहता है,
नहि बसन्त चितचोर।
मौन रहो अब तुहूँ पपीहा,
पिया रटत मन मोर।
रइन रइन दिन हूँ अँधियारी,
नहि चितई हित भोर।2।

3—मुक्तक

प्रेमोन्मत्त विकल विरही तूँ,
निष्प्रभ निशा अश्रु प्रसवी।
अपलक अमित नेत्र ये तेरे,
निरखति पथगामिनी पृथवी।
अतन शून्य रे नग्न गगन तब,
उर न बसी प्रेयसि पदवी।
वसुन्धरा है तुमसे पहले,
व्यर्थ बना कामी मुरवी।।

4—मुक्तक

इन्द्री

अरी मनोज भाविनी,
तू व्यर्थ व्यथित कर रही।
विलक्षिता क्षणिक शचुन,
विलोड़ि उरसि मह रही।।1।।
सृष्टि भूत व्रात क्यों,
अमर अवलि विकल रही।
कल्विसी कलिलयुता,
असह तपन तपा रही।।

5—मुक्तक

प्रिय परसन तेरी मर्मी,
कब होगी सुखमयि सिहरन।
कम्पित गति तन मन मेरी,
शशिकला अरुणमयि सुबरन।
कब होगा उदधि पयोदी,
युग मत्सर का नव क्रीड़न।
कब मिथुन राशि पुनि होगी,
होगा उर का उत्पीड़न।।

6—मुक्तक

श्यामा अमा

बनी रमा री श्याम अमा तूँ,
विरहानल संतप्त शरीरे।
प्रियतम का सामीप्य न सुलभी,
तमाश्रिता सहती बहु पीरे।
दीपशिखा की सुषमा लाजति,
नेह विदग्धता सीकर नीरे।
हृदय वह्नि विक्षेपित जित तित,
नभ प्रांगण मे ईरे तीरे।।

7—मुक्तक

. आकाश और पृथ्वी

अगणित नयन अश्रु बरसाते,
अम्बर के नित भर यामिनी।
अंचल भरता मोती सौरभ,
प्रमुदित करने हित भामिनो।
पर वह द्रवित नही होती है,
अचल बनी अचला कामिनी।
विश्व जानता है वसुधा को,
वसु वन्धित वसु की रागिनी।।